एक और भगोड़ा

गुलज़ार

दो पहियों पे दौड़े गाड़ी
चार पाँव पे घोड़ा
फिर भी उनसे आगे भागे
सीताराम भगोड़ा

ठण्डा पानी देख के भागे
कम्बल ओढ़ नहाए
आग से भागे, नाग से भागे
अफसर से घबराए

सीटी सुन के थर-थर काँपे
घण्टी सुनी कि दौड़ा
दो पहियों पे.....

कड़वी दवा से कोसों भागे
मीठे पर मँडराए
शोर से भागे, ज़ोर से भागे
पुलिस अगर दिख जाए

कुत्ता भौंके, ऐसा चौंके
बिन जूतों के दौड़ा
दो पहियों पे.....

काम से लेकिन न भागे,
सब के काम करे
सारी बस्ती नाम जपे,
और सीताराम करे

पण्डित की आवाज़ सुनी
अन्दर से मन्दिर दौड़ा
दो पहियों पे दौड़े गाड़ी
चार पाँव पे घोड़ा
फिर भी उनसे आगे भागे
सीताराम भगोड़ा

चित्रः तापोशी घोषाल